पवित्र कुरआन में अल्लाह तआला ने फरमायाः

''ऐ ईमान वालो! अल्लाह से डरते रहो और हर शख्स देख (भाल) ले कि कल (क़यामत) के वास्ते उसने (आमाल) का क्या ज़ख़ीरा भेजा है और हर वक़्त अल्लाह से डरते रहो अल्लाह तुम्हारे सब आमाल से बाख़बर है। (सूरे हश्रः१८)

मानव सेवा

मुहम्मद अज़हर मदनी

अबू हुरैरह रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जिसने दुनिया के दुखों में से किसी के दुख को दूर कर दिया अल्लाह भी क्यामत के दुखों में से एक दुख को उससे दूर कर देगा और जो किसी परेशानहाल के लिये आसानी पैदा करे गा अल्लाह तआला दुनिया व आखिरत में उसे के लिये भी आसानी पैदा कर देगा, फरमायाः जो किसी मुसलमान के ऐब को छुपाये गा अल्लाह तआला भी दुनिया व आखिरत में उसके ऐब को भी छिपायेगा, इसी तरह फरमाया कि अल्लाह उस वक़्त तक अपने बन्दे की मदद में लगा रहता है जब तक बन्दा अपने भाई की मदद में लगा रहता है। (सहीह मुस्लिम)

इन्सान और जानवर में बुनियादी फर्क़ यह है कि अल्लाह ने इन्सान को अक्ल दी है ताकि वह भले और बुरे में अन्तर कर सके और इसी लिये इन्सान दुनिया की हर सृष्टि से श्रेष्ठ है। इसके विपरीत जानवर इस नेमत और खूबियों से वंचित है।

उपयुर्क्त हदीस में एक दूसरे की सहायता करने, आड़े वक़्त में एक दूसरे के काम आने और एक दूसरे की कमियों को दरगुज़र करने का उपदेश दिया गया है।

समाज में हर प्रकार के लोग पाये जाते हैं, कोई गरीब है कोई अमीर है, कोई शिक्षित है कोई अशिक्षित है, कोई हुनर वाला है कोई बेहुनर है, लेकिन इसके बावजूद इन्सान की हैसियत से सब बराबर हैं। इंसान की जिन्दगी में उतार चढ़ाव आते रहते हैं, यह इन्सान के जीवन का हिस्सा है, ऐसे में जरूरी है कि ज़रूरत पड़ने में हम ज़रूरत मन्द की मदद करें, किसी को कोई दुख हो और सामर्थ्य रखते हों तो उसकी मदद करें, उसके दुख को दूर करने की कोशिश करें, किसी की कमियों को छुपा कर उसके सुधार का प्रयास करें, सरेआम उसको टोक कर कर सुधार करना उचित नहीं है। यह सब मानव सेवा की श्रणी में आता है। उपर्युक्त हदीस में हम सभी इन्सानों को मानव सेवा का उपदेश दिया गया है। मानव सेवा अनेकों प्रकार से होती है। ज़रूरतमन्द को उधार देकर मदद कर सकते हैं अच्छा मश्वरा देकर मदद कर सकते हैं, किसी गरीब के एलाज में खर्च सहन करके मदद कर सकते हैं। मानव सेवा ईश्वर को खुश करने का एक बहुत बड़ा माध्यम है। इस दुनिया में जो भी रह रहा है हर किसी की कोई न कोई सोच है किसी न किसी धर्म से सबन्ध रखता है लेकिन कामयाब वही है जो अल्लाह के बताए गये सिद्धांतों के अनुसार जीवन यापन करे। मानव सेवा इन्सान के जीवन का हिस्सा होने के साथ इस्लाम धर्म की शिक्षाओं का एक अभिन्न भाग है हमें इसके द्वारा अल्लाह की सामीप्ता प्राप्त करनी चाहिए।

मासिक

इसलाहे समाज

जनवरी 2023 वर्ष 34 अंक 1

रजबुल मुरज्जब 1444 हिजरी

संरक्षक

असग़र अ़ली 'सलफ़ी'

संपादक

मुहम्मद ताहिर

❑	वार्षिक राशि	100 रुपये
❑	प्रति कापी	10 रुपये

सम्पर्क

मासिक इसलाहे समाज (हिन्दी)
4116, उर्दू बाज़ार, जामा मस्जिद
दिल्ली-110006
फोन : 23273407 फ़ैक्स: 23246613
RNI No. 53452/90

मुद्रक एवं प्रकाशक मुहम्मद इरफान शाकिर ने मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द की ओर से एम.एस. प्रिन्टर्स, A-145 गली न० 8 चौहान बांगर, सीलमपुर, दिल्ली-53 से छपवा कर अहले हदीस मंज़िल 4116, उर्दू बाज़ार, जामा मस्जिद दिल्ली-6 से प्रकाशित किया।

सम्पादक: मुहम्मद ताहिर

लेखक के विचारों से संस्था का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

इस अंक में

1.	मानव सेवा	2
2.	अमल से ज़िन्दगी बनती है	4
3.	जैसी संगत वैसा फल	6
4.	बच्चों, गरीबों और गुलामों पर दया	8
5.	शरीअत और जुम्हूरियत ज(लोकतंत्र)	10
6.	जमाअत व जमीअत का केन्द्रः पर्यवेक्षण और अनुभव	11
7.	शिक्षा एवं प्रशिक्षण के बारे में मश्वरे	16
8.	इस्लाम की शिक्षाएं और सिद्धांत	17
9.	कार्य समिति की मिटिंग में आतंकवाद की निंदा	20
10.	कुरआन में सद्व्यवहार की शिक्षाएं	24
11.	यतीमों के अधिकार	26
12.	अपील	27
13.	अहले हदीस मंज़िल (विज्ञापन)	28

ईमेल:-

Jaridahtarjuman@gmail.com

Jamiatahlehadeeshind@hotmail.com

अब 'इसलाहे समाज' इन्टरनेट पर भी उपलब्ध है

वेब साइट:- www.ahlehadees.org

सम्पादकीय

अमल से जिन्दगी बनती है

मौलाना असगर अली इमाम महदी सलफी
अध्यक्ष, मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द

इस वक़्त कामों का ढेर लगा हुआ है और फराइज़ और वाजिबात जो व्यक्ति और समाज के जिम्मे हैं वह बेशुमार हैं। ज़रूरतों की अधिकता दिन ब दिन बढ़ती जा रही है। बहुत से क्षेत्र और समय ऐसे भी हैं जिस में कोई काम करने वाला नहीं मिल रहा है यही स्थिति लगभग हर क्षेत्र में है। काम करने वालों की कमी बहुत से जगहों पर खुली आखों से देखी जा सकती है। इन्सान की जिन्दगी में सबसे बड़ी ज़रूरत दीन व चरित्र है इस की अहमियत और डिमान्ड दुनिया और आखिरत दोनों जगह सर्वमान्य है बल्कि दुनिया और आखिरत की वास्तविक सफलता, अम्न व सुख, लाभकारी और संतुष्ट जनक जीवन का आधार इसी पर है। केवल भौतिक और दुनियावी जिन्दगी में दुनियादारी बरत कर हर दुख और हर तरह का सुख प्राप्त नहीं किया जा सकता और न ही प्रतिष्ठित जीवन गुज़ारा जा सकता है और न असल खुशियों की प्राप्ति संभव है। आप स्वयं विचार करें कि आज हर जगह और हर स्तर पर दीन एवं नैतिकता का क्या हाल है और व्यक्तिगत व सामूहिक परिवारिक, समाजिक और साधारण जीवन में यह बुनियादी ज़रूरत कितना सीमित है। बहुत कम ऐसे हैं जो अपने धार्मिक कर्तव्य और दीन व ईमान की पोख्तगी की वजह से ऐसा करते हैं विशेष रूप से मुसलमानों में दीन की कमी और दीन व ईमान की मांग को पूरा करते हुए दीन पर अमल करने का अकाल और किल्लत साधारण है बल्कि दीन का आधार तौहादी, सुन्नत के अनुसार और आखिरत में छोटे बड़े अम्ल की जवाबदेही का एहसास भी जाता रहा है। नमाज़, रोज़ा, हज, ज़कात, बन्दों और अल्लाह के अधिकार में बहुत से अधिकार ऐसे हैं जिन में से कुछ प्रतिशत को भी हम अदा करने में कोताह हैं बल्कि इनके ज्ञान से भी अनभिज्ञ हैं, इनकी हमें जानकारी ही नहीं है। लोगों का कहना है कि पांच प्रतिशत भी मुसलमानों की आबादी का हिस्सा नमाज़ नहीं पढ़ती। इस पांच प्रतिशत में से भी नमाज़ की अहमियत उसके अहकाम व मसाइल और आदाब व शर्तों का ज्ञान रखने वालों का प्रतिशत कम है जब इस्लाम के स्तंभों में से एक नमाज़ जैसी इबादत के बारे में यह हाल है तो अन्य इबादतों और अधिकारों की क्या स्थिति हो गी?

कहने का मक़सद यह है कि हम में से हर व्यक्ति के ज़िम्मे कितने बुनियादी और अहम काम हैं जो करने के हैं, कराने के हैं, सीखने के हैं और सिखाने के हैं, उनको जानें और बरत कर दिखाएं। अगर उम्मत के ओलमा, अध्यापक, क्षात्र और देश के सभी व्यवपारी, उद्योगपति, राजनेता और शासक सब जमा हो कर केवल एक कर्तव्य के तईं मेहनत करें फिर भी काम करने

वालों की कमी हो गी और काम बाकी रहे गा क्योंकि काम का बोझ काम न करने की वजह से काफी बढ़ चुका है। ज्ञान की प्राप्ति तो हर किसी पर फर्ज़ है और हर किसी का हक़ भी बनता है। मगर क्या केवल सरकार के खजाने और घर के गार्जियन और समाज के धनवान लोगों के सर इसे डाल कर व्यक्ति और समाज अपनी जिम्मेदारी से मुक्त हो जाएगा और पठन एवं पाठन का काम पूरा हो जाएगा। कभी सख्त आर्थिक संकट होने और माल व दौलत के मोहताज व ज़रूरतमन्द होने के बावजूद ज्ञान की ख़ातिर माल छोड़ना हो गा। चटाइयों पर बैठ कर झोंपड़ियों में नरम गरम सह कर और अपने आप को मिटा कर उम्मत का भला करना होगा और असाक्षरता को खतम करना हो गा। घर के हर व्यक्ति और बच्चा और महल्ले के हर गरीब व मालदार के छोटे बड़े बच्चों के लिये जहाँ कम उजरत पर मेहनती और निःस्वार्थ अध्यापक बन कर अपने काम को इस तरह अंजाम देना हो गा कि कोई बच्चा पीछे और बिना शिक्षा के न रह जाए तो वहीं महान ओलमा, आर्ट और साइन्स के अध्यापकों को भी दिन रात एक करना होगा।

हमें विश्वास और ईमान रखना हो गा कि अल्लाह तआला बिना मेहनत और प्रयास के कुछ नहीं अता करते इस लिये हमें हरकत और अमल करना होगा, हर शख्स को अपने हिस्से की जिम्मेदारी निभानी होगी तभी हम दुनिया में चलने के सक्षम करार पायें गे वरना रद्दी की टोकरी में डाल दिये जायेंगे गतिरोध और पसपाई का शिकार हो जाएंगे और हर मैदान में आप नाकारा करार दिये जाएंगे। इस तरह व्यक्ति बेकार हो जाए गा और जमाअत पर बेअमली का आरोप लगेगा और यूं देश व समुदाय में काम करने वालों की कमी का शिकवा शिकायत आम हो जाएगा, देश व समुदाय की तरक्की रूक जाए गी, एक दूसरे पर जो आरोप और प्रत्यारोप हो रहे हैं उसका तूमार बांधा जाएगा और हर इन्सान अपने किये के अंजाम को पहुंच जाएगा इस निष्क्रयता और बुरे अमल और अपरिणामदर्शिता का अंजाम सबको भुगतना पड़ेगा।

इस्लाहे समाज
खरीदारी फार्म

पत्रिका को घर पर मंगवाने के लिये अपने पते में निम्न विवरण ज़रूर लिखें।

नाम.....

पिता का नाम.....

स्थान.....

पोस्ट आफिस.....

वाया.....

तहसील.....

जिला.....

पिन कोड.....

राज्य का नाम.....

मोबाइन नम्बर.....

अपना मनी आर्डर इस पते पर भेजें।

आफिस का पताःअहले हदीस मंज़िल 4116, उर्दू बाज़ार, जामा मस्जिद दिल्ली-6

बैंक और एकाउन्ट का नामः

Markazi Jamiat Ahle Hadees Hind

A/c No. 629201058685 (ICICI Bank) Chani Chowk, Delhi-6

RTGS/NEFT/IFSC CODE ICIC0006292

नोटः-बैंक द्वारा रक़म भेजने से पहले आफिस को सूचित करें।

जैसी संगत वैसा फल

सईदुर्रहमान सनाबिली

यह सच है कि इन्सान की पहचान उसके अपने साथियों से होती है, इन्सान अपने दोस्त के आदात और तरीक़ों से बहुत प्रभावित होता है और असर भी डालता है। आप अपने आस पास की समीक्षा करें तो इस हकीक़त को आसानी से समझ लेंगे कि नेक लोगों की संगत में रहने वाले इन्सान की दुनिया प्रशंसा करती है, उसे विश्वसनीय और भरोसे मन्द समझती है, ऐसे इन्सान के बारे में सन्देह नहीं किया जाता है, अगर समाज में कोई वारदात होती है तो शक की सूई इस पर नहीं जाती और अगर असमाजिक तत्व इस पर झूठा आरोप लगाते हैं तो इस की तरफ से दिफा करने वाले लोगों की एक बड़ी तादाद मौजूद होती है लेकिन जो बुरे लोगों की संगत में रहते हैं तो समाज के लोग इसे भी बुरी नज़रों से देखते हैं, समाज में ऐसे इन्सान की छवि नकारात्मक हो जाती है। यही वजह है कि इस्लाम धर्म ने अपने अनुयाइयों को अच्छी संगत अपनाने के बारे में पूरे तौर पर मार्गदर्शन और निर्देश दिया है कि किन लोगों की संगत हमारे लिये लाभकारी है, किन लोगों को अपना दोस्त बनाया जा सकता है और वह कौन लोग हैं जिनकी संगत से अच्छे परिणाम की उम्मीद की जा सकती है। इस्लाम ने ऐसे लोगों की निशानदेही की है जिनकी दोस्ती हानिकारक है और यह भी बता दिया कि बुरे लोगों की संगत या साथ रहने से दूर रहना चाहिए।

हमें यह मालूम होना चाहिए कि लोगों के स्वभाव अलग अलग होते हैं कुछ तो भलाई के सन्देश्वाहक होने की वजह से भलाई की तरफ आमंत्रित करते हैं और कुछ लोग बुरे स्वभाव की वजह से बुराई की तरफ खींचते हैं जैसा कि हदीस में भी आया है। पैगम्बर मुहम्मद स०अ०व० ने फरमायाः निसन्देह कुछ लोग नेकियों के जारी करने वाले और बुराइयों को बन्द करने वाले होते हैं और कुछ लोग बुराइयों को जारी करने वाले और नेकियों को बन्द करने वाले होते हैं। खुश्खबरी है उस शख्स के लिये जिसको अल्लाह नेकी को जारी करने वाला बना दे और बर्बादी है उसके लिये जिसके हाथों को अल्लाह तआला बुराइयों को जारी करने वाला बना दे। (सुनन इब्ने माजा-२३७ अल्लामा अलबानी ने इस हदीस को हसन क़रार दिया है।

अबू मूसा अश्अरी रज़िअल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि पैगम्बर मुहम्मद स०अ०व० ने फरमाया नेक साथी की मिसल कस्तूरी बेचने वाले इन्सान जैसी है और बुरा साथी लोहार जैसा है कस्तूरी (खुश्बू) बेचने वाला या खुद से तुझे खुश्बू दे दे गा या तू उससे खरीद लेगा (अगर यह दोनों बातें न हुईं तो) कम से कम तुझे उसकी खुश्बू तो हासिल होती रहेगी। रहा लोहार या तो वह तुम्हारे कपड़े जला दे गा या फिर तुझे नागवार धुवां तो फाँकना ही पड़ेगा। (सहीह बख़ारी ५५४४, सहीह मुस्लिम ६३८२)

यह हदीस स्पष्ट तौर पर बताती है कि अच्छे की संगत जहां इन्सान के रहन सहन, तौर तरीक़ा, सोच व फिक्र, आदात, चरित्र का पता देती है और अच्छा साथी दीन दुनिया की भलाइयों की प्राप्ति का ज़रीआ है और बुरी संगत और बुरे इन्सान के

साथ उठना बैठना या संगत इन्सान के फिक्र व ख्याल, तौर तरीक़ा और चरित्र के लिये हानिकारक है और सब पर बुरा असर डालता है। इमाम नौवी रह० ने इस हदीस की व्याख्या करते हुए लिखा है कि इस हदीस में भले लोगों, अच्छे आचरण व स्वभाव रखने वालों, संयमी, ज्ञानी और शिष्ट लोगों के साथ बैठने की फजीलत (श्रेष्ठता) बयान की गयी है और बुरे लोगों, चुगली करने, झूठी और लम्बी चौड़ी बातें करने वालों के साथ उठने बैठने से रोका गया है (शरह सहीह मुस्लिम ६/१८)

हाफिज़ इब्ने हजर अस्क़लानी रह० ने इस हदीस के अन्तर्गत लिखा है कि जिस शख्स की वजह से दीन दुनिया का नुक़सान हो, उसके साथ उठने बैठने से हदीस में मना किया गया है और जिस की वजह से दीन दुनिया का नफा हो उसके साथ बैठने की हदीस में प्ररेणा दी गई है। (फ़त्हुल बारी ४/३२४)

नेक और अच्छे दोस्त के चुनाव का एक अहम फायदा यह है कि नेक लोगों की संगत से इंसान प्रभावित होता है क्योंकि इन्सान के लिये अपने साथी की पैरवी करना स्वभाविक बात है और उसके ज्ञान, अमल, आदात और उसके तौर तरीके से प्रभावित होता है। इस बात की व्याख्या अबू हुरैरह रजिअल्लाहो तआला अन्हो की इस हदीस से होती है जिसमें पैगम्बर मुहम्मद स०अ०व० ने फरमाया आदमी अपने दोस्त के दीन (तौर तरीके) पर होता

हम में से हर शख्स को चाहिए कि हम जिस शख्स के साथ उठते बैठते हैं उसके बारे में जांच पड़ताल कर लें कि ऐसा तो नहीं कि उसकी संगत हमारे लिये दीन से दूरी का सबब बन रही है तो ऐसी संगत और दोस्ती को छोड़ कर हमें ऐसे इन्सान से दूर रहने की भरसक कोशिश करनी चाहिए

है इसलिये तुम में से हर एक को सोच समझ कर दोस्त का चयन करना चाहिए (सुनन अबू दाऊद ४८३३, सुनन तिर्मिज़ी २२७८, मुस्नद अहमद ८०४८ अल्लामा अलबानी ने इस हदीस को सहीह करार दिया है (सहीहुल जामे ३५४५)

यहां यह बात स्पष्ट हो जाती है कि हमें ऐसे लोगों की संगत अपनानी चाहिए जिनकी एमानतदारी और दीनदारी पर हमें इतमिनान हो। यही वजह है कि सम्माननीय असूलाफ (पूर्वज) कहा करते थे कि किसी इन्सान के बारे में जानना हो तो उसके दोस्त अहबाब के बारे में जानकारी हासिल कर लो तो उसकी हक़ीक़त मालूम हो जाएगी। अदी बिन ज़ैद रजिअल्लाहो तआला अन्हो अपनी कविता में कहते हैं :

कि आदमी के बारे में पूछने से पहले उसके दोस्तों के बारे में पूछ लो, क्योंकि आदमी अपने दोस्त की पैरवी करता है, जब तुम लोगों में मिल जुल कर रहो तो उनमें से बेहतर शख्स को अपना साथी बनाओ और बुरे को अपना साथी न बनाओ क्यों कि बुरा साथ तुझे भी हलाक कर देगा। (अदबुद दुनिया वद-दीन पृष्ठ १६७)

हम में से हर शख्स को चाहिए कि हम जिस शख्स के साथ उठते बैठते हैं उसके बारे में जांच पड़ताल कर लें कि ऐसा तो नहीं कि उसकी संगत हमारे लिये दीन से दूरी का सबब बन रही है तो ऐसी संगत और दोस्ती को छोड़ कर हमें ऐसे इन्सान से दूर रहने की भरसक कोशिश करनी चाहिए अगर हमने इस की इस्लाह कर ली तो यह अमल हमारे लिये सदकए जारिया साबित होगा। और अगर कोई दोस्ती या संगत इस्लाम से करीब कर रही हो तो हमें ऐसी दोस्ती की कद्र और सम्मान करना चाहिए।

बच्चों, गरीबों और गुलामों पर दया

❑ अबुल कलाम आज़ाद

हुजूर (हज़रत मुहम्मद) सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम बच्चों पर बहुत शफ़क़त और दया फरमाते, आप सफर से वापस आते और लोग स्वागत के लिये निकलते तो बच्चे भी साथ होते और वह मामूल के अनुसार दौड़ कर एक दूसरे से आगे निकल जाने की कोशिश करते। जो पहले पहुंचते आप उन्हें साथ सवारी पर बिठा लेते। रास्ते में मिल जाते तो उन्हें स्वयं सलाम करते और उनसे भी प्यार और शफ़क़त का यही बर्ताव करते।

एक बार एक बहुत ही ग़रीब औरत हज़रत आइशा रज़िअल्लाहो अन्हा के पास आई उसकी दो बच्चियां भी साथ में थीं। इत्तेफ़ाक़ से हज़रत आइशा के पास उस वक्त कुछ न था, एक खुजूर पड़ी थी वह उस औरत को दे दी उसने खुजूर के दो टुकड़े किये और एक एक टुकड़ा दोनों बच्चियों को दे दिया। हज़रत आइशा ने यह वाक़्या रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को सुनाया तो फरमाया जिस के दिल में खुदा औलाद की मुहब्बत डाल दे और वह इस मुहब्बत का हक़ अदा करे तो नरक (दोज़ख़) की आग से महफूज़ रहेगा।

अबू ज़र गिफ़ारी रजिअल्लाहो तआला अन्हो से आप ने फरमाया था तुम्हारा गुलाम (सेवक) तुम्हारे भाई हैं जो स्वयं खाओ, उन्हें खिलाओ जो खुद पहनो उन्हें पहनाओ, इसलिये इसके बाद से अबू ज़र रजिअल्लाहो तआला अन्हो ने अपने गुलाम को हमेशा खाने पहनने वगैरह में अपने बराबर रखा।

गुलामों के लिये ''गुलाम'' का शब्द भी गवारा (पसन्द) न था। हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया उन्हें गुलाम और लौंडी कह कर न पुकारा करो ''मेरा बच्चा' मेरी बच्ची'' कहा करो। आप के पास जो गुलाम आता, उसे आज़ाद कर देते लेकिन वह आज़ाद होकर भी आप के दया व प्यार की जंजीर में जकड़े रहते। जैद बिन हारिसा के पिता और चचा उनको लेने के लिये आए और हर कीमत चुकाने के लिये तैयार थे। आप पहले ही जैद को आज़ाद कर चुके थे। जाने न जाने का मामला जैद रज़िअल्लाहो तआला अन्हो पर छोड़ दिया उन्होंने जाने से इन्कार कर दिया और आप के दया व कृपा को मां बाप और दूसरे खूनी रिश्तेदार के दया पर वरियता दी। मुहब्बत और शफक़त के इस सम्मान का सहीह अन्दाज़ा कौन कर सकता है जिसके सामने करीबतरीन खूनी रिश्ते भी बे हक़ीक़त रह गये थे? जैद रज़िअल्लाहो अन्हो के बेटे उसामा रज़िअल्लाहो अन्हो से आप को जितनी मुहब्बत थी वह इसी से स्पष्ट है कि बाज अहम मामलात में उसामा रज़िअल्लाहो तआला अन्हो ही को आप की बारगाह में सिफारिशी बनाया जाता था।

एक सहाबी (हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के

साथी) अपने गुलाम को मार रहे थे। पीछे से आवाज़ आई खुदा को तुम पर इससे ज़्यादा शक्ति है सहाबी ने मुड़ कर देखा तो खुद रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम थे। अर्ज किया ऐ अल्लाह के रसूल इसे मैंने अल्लाह की खुशी के लिये आज़ाद कर दिया। फ़रमाया अगर तुम इसे आज़ाद न करते तो जहन्नम की आग तुम्हें छू लेती।

सब से आखिरी वसिय्यतों में से एक वसिय्यत यह थी कि गुलामों और लौंडियों के मामले में खुदा से डरते रहना। एक शख्स ने पूछा ऐ अल्लाह के रसूल गुलाम के दोष को (कुसूर) कितनी बार मआफ करूं। आप खामूश रहे। जब तीसरी बार यही गुजारिश की तो फ़रमाया हर दिन सत्तर बार।

अल्लाह के रसूल हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ज़्यादा तर दुआ करते थे कि ऐ अल्लाह मुझे गरीब मिस्कीन रख, मिस्कीन उठा और मिस्कीनों के साथ मेरा हश्र कर। हज़रत आइशा रजिअल्लाहो तआला अन्हा ने पूछा ऐसा क्यों? फरमाया इस लिये कि मिस्कीन दौलतमन्दों से पहले जन्नत में जायेंगे फिर फरमाया किसी मिस्कीन को अपने दरवाजे से खाली हाथ न लौटाओ, कुछ न हो तो छोहारे का एक टुकड़ा ही सही, ज़रूर दे दो। आइशा ग़रीबों से मुहब्बत करो, उन्हें अपने से नज़दीक रखो, खुदा भी तुम को अपने से नज़दीक रखेगा।

हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः जब उसकी वफ़ात हो तो मुझे ज़रूर खबर करना। मैं जनाज़े की नमाज़ पढ़ाऊंगा। इत्तेफाक़ से बुढ़िया का इन्तेक़ाल कुछ रात गये हुआ। सहाबा ने आप को रात के वक़्त उठाना गवारा न किया और बुढ़िया को दफन कर दिया। सुबह के वक़्त आप ने पूछा और पूरी बात मालूम हुई तो इस खातून की क़बर पर जाकर जनाज़े की नमाज़ अदा की।

अवाली में एक बुढ़िया थी, उसे जांबर (स्वस्थ्य होने) की उम्मीद न थी। हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः जब उसकी वफ़ात हो तो मुझे ज़रूर खबर करना। मैं जनाज़े की नमाज़ पढ़ाऊंगा। इत्तेफाक़ से बुढ़िया का इन्तेक़ाल कुछ रात गये हुआ। सहाबा ने आप को रात के वक़्त उठाना गवारा न किया और बुढ़िया को दफन कर दिया। सुबह के वक़्त आप ने पूछा और पूरी बात मालूम हुई तो इस खातून की क़बर पर जाकर जनाज़े की नमाज़ अदा की।

एक बार एक क़बीला मुसाफिरवार मदीना आया उसकी हालत खस्ता थी, किसी के शरीर पर साबित कपड़ा नहीं था, पांव नंगे थे, खालें बदन पर बंधी हुई थीं। हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की नज़र मुबारक उन लोगों की खस्तगी पर पड़ी तो चेहरे का रंग बदल गया। दुखी हालत में अन्दर गये फिर बाहर आए और बिलाल को अज़ान का हुक्म दिया नमाज़ के बाद एक खुतबे में सबको इन गरीबों की मदद करने पर तैयार किया।

शरीअत और जुम्हूरियत (लोकतंत्र)

इब्ने अहमद नक़वी

ख़लीफ़ा अमीरूल मोमिनीन उमर बिन खत्ताब रज़िअल्लाहो तआला अन्हो मिंबर पर तक़रीर कर रहे थे कि एक शख्स ने भरी सभा में उनसे पूछा कि ग़नीमत के माल से सबको एक चादर मिली थी आपको भी एक ही दी गई थी अभी जो कुर्ता आप पहने हुए हैं वह एक चादर में नहीं बन सकता क्योंकि आप लम्बे डील डोल के हैं इसलिये इसमें दो चादरें खर्च हुईं आप ने अपने हिस्से से ज़्यादा कैसे ले लिया। इस्लाम का विशाल ख़लीफा क्रोधित नहीं हुआ, अपने बेटे अब्दुल्लाह से कहा कि तुम सहीह सूरतेहाल से वाक़िफ (जानते) हो आपत्ति करने वाले को पूरी बात बताओ। अब्दुल्लाह बिन उमर ने कहा कि मैंने अपने हिस्से की चादर भी अपने बाप को दे दी थी ताकि वह अपना कपड़ा बना लें। लोकतंत्र की एक शर्त यह भी है कि हर साधारण और असाधारण को बिना अन्तर के न्याय मिले, इसमें अपने और ग़ैर का अन्तर न हो।

एक मुसलमान का एक यहूदी से झगड़ा हुआ बात पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास पहुंची, आपने सुनवाई करने के बाद यहूदी के हक़ में फैसला दे दिया।

हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ के सामने एक मुक़दमा पेश हुआ जिसमें हिशाम बिन उमैया का शहज़ादा पक्षकार था। वह फर्श पर बैठ गया इस पर खलीफा ने इसे झिड़का और कहा अपने पक्षकार के साथ खड़े हो। सुनवाई के दौरान किसी पक्षकार में अन्तर नहीं किया जाएगा।

एक शख्स ने हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ के दरबार में गुहार लगाई कि मेरी मिलकियत (स्वामित्व) में जो अराज़ी है इस पर एक कलीसा (चर्च) बना हुआ है इसे गिराने की इजाज़त दी जाए। खलीफा ने पूछा कि जब तुम ने यह जमीन खरीदी थी तो क्या उस वक़्त यह गिरजा वहां मौजूद था उसने हां में जवाब दिया। इस पर ख़लीफ़ा ने कहा कि चूंकि यह गिरजा, अराज़ी के तुम्हारी मिलकियत में आने से पहले भी मौजूद था। इसलिये अब इसे गिराया नहीं जा सकता।

दिमश्क के बाज़ मुसलमानों ने ईसाइयों के एक चर्च पर क़बज़ा कर लिया। उन्होंने हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ से गुहार की। आपने सरकारी कर्मियों को भेज कर मुसलमानों को वहां से बेदखल कर दिया और गिरजा ईसाइयों के हवाले कर दिया गया।

अल्पसंख्यकों का कल्याण और कमज़ोरों को सहारा, लोगों को सरकारी सहायता भी लोकतंत्र का महत्वपूर्ण अवामी पहलू है। हज़रत उमर बिन खत्ताब ने एक बूढ़े यहूदी को देखा कि वह बाज़ार में भीख मांग रहा है आपने उस से पूछा कि तुम भीख (भिक्षा) क्यों मांग रहे हो? उसने जवाब दिया कि मुझे जिज़या अदा करना है इसलिये भीख मांग रहा हूं। खलीफा ने आदेश जारी किया कि बूढ़ों से जिज़या न लिया जाए। इसके बाद बैतुल माल (सरकारी खज़ाने) से इस यहूदी के लिये वज़ीफ़ा निर्धारित कर दिया ताकि वह हाथ फैलाने पर मजबूर न हो। (जरीदा तर्जुमान पाक्षिक १६-३१ मार्च २००६ के संपादकीय का उद्धरण)

जमाअत व जमीअत का केन्द्र : पर्यवेक्षण और अनुभव

वकील परवेज़
कोषाध्यक्ष, मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द

पिछले ६०-६५ वर्षों से कार्य एवं सलाहकार समिति के सदस्य की हैसियत से और १० वर्षों में कोषाध्यक्ष की हैसियत से अधिकतर मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द के रोज़ाना की आमदनी और खर्च के हिसाबात देखने के लिये मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द में आना जाना रहता था। बाद में अहले हदीस मंज़िल और अहले हदीस कम्पलैक्स की जगहें बुज़ुर्गों, जिम्मेदारों और शुभचिंतकों के प्रयासों से मर्कज़ी जमीअत के लिये हासिल हो जाने के बाद भी यह सिलसिला जारी रहा। अल्लाह तआला उनको बेहतरीन बदला दे। मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द की केन्द्रीय आफिस अहले हदीस मंज़िल अपनी खरीदारी के अव्वल दिन ही से जरजर हालत में थी यही हमारी आखिरी मंज़िल (पड़ाव) होता रहा और केन्द्रीय कार्यालय होने के नाते इसमें क्याम भी रहता था विशेष रूप से दस वर्षों से कोषाध्यक्ष चयनित होने के बाद अधिकतर इसकी जियारत होती रहती थी लेकिन इस की जर्जरता पहले ही दिन से चिंता का विषय बनी रही और इसके अधिकांश भागों की जर्जरता से भय इसमें ठेहरने के वक़्त से ही तारी रहता था। ऐसा लगता था कि वर्षों से मरम्मत और रंग व रोग़न न होने के सबब बिलडिंग टूटती और जरजर होती रही। संभव है बिलडिंग खरीदने के बाद इसकी मरम्मत और बाहर से सफाई पर ध्यान न दिया गया हो। बिलडिंग में प्रवेश का दरवाज़ा अपनी जरर्जता व्यक्त करता नज़र आ रहा था। मेन गेट से प्रवेश करते ही दायें जानिब एक अत्यंत जरजर कमरा संभवतः 8x10 स्कुवायर फिट का कमरा अपनी बेबसी का शिकार था जो मेरे लिये और कुछ खास मेहमानों के लिये विशेष था जिस का पलास्टर उखड़ गया था और बरसात में पानी भी टपकता था। इससे लगा हुआ 15x8 का पलास्टर से वंचित एक कमरा था जो किताबों का स्टाक रूम था। यह कमरा भी अपनी जर्जरता का रोना रोता नज़र आता था जहाँ चूहों ने अपना बसेरा कर रखा था जो किताबों को कुतर कर किताबों की क्षवि बिगाड़ देते थे। इसके सामने स्वागत कार्यालय था जहां देश-विदेश से मेहमान पधारते थे जहाँ ढंग का दफतर था न आरामदायक कुर्सियां थीं और न ही रिकार्ड रखने के लिये कोई अच्छी अलमारी थी, इससे पश्चिम साइड सटा हुआ एक कमरा था जो बुक

डिपो के तौर पर स्तेमाल होता था और एक मचान थी जहाँ बेची जाने वाली किताबें जमा थीं। इसके आगे जब हम बढ़ें तो दो शौचालय थे जो अत्यंत गन्दे और बहुत छोटे थे जिसे बहुत मजबूरी में स्तेमाल किया जाता था। इसी के दायें जानिब चन्द टोटियों पर आधारित वजूखाना था। इससे लगा हुआ एक अत्यंत जर्जर कमरा था जहां किसी ज़माने में किताबत होती थी और कातिब का रेसीडेन्ट वहीं था इसी से लगा एक 6x6 का कमरा था जहां एकाउन्टेन्ट बैठ कर हिसाब किताब करते थे। इसी के बराबर में 7x9 का एक कमरा मर्कज़ी जमीअत के महा सचिव का था जहां एक वक़्त में चन्द लोग ही बैठ सकते थे। इसी से सटा हुआ कम्पयूटर रूम और चारों पत्रिकाओं का एडीटिंग रूम था। पश्चिम जानिब एक छोटी से मस्जिद नुमा जगह थी जहां पांच वक़्त की नमाज़ अदा की जाती थी। एक कोने में 10x8 का महा सचिव का कमरा था जहां कुर्सियां पड़ी रहती थीं जो अमीर महा सचिव का संयुक्त कार्यालय था। यहीं महा सचिव की हैसियत से मौलाना असगर अली इमाम महदी सलफी दफतर के कार्य अंजाम देते थे और पूरे हिन्दुस्तान के अहले हदीसों को वहीं से निर्देश और सलाह दिया जाता था। देश-विदेश की महत्वपूर्ण और प्रसिद्ध हस्तियाँ और पदधारी इसी दफतर में तशरीफ लाते (पधारते) थे जिस की न केवल दीवारें बल्कि फर्श व छत भी अपनी जर्जरता का शिकार थीं। इस जर्जर मगर अमीर महोदय के दृढ़ साहस से ही सात भव्य आल इंडिया अहले हदीस कांफ्रेन्सों के आयोजन का पलान व प्रारूप बना जिस में कई बार हरमैन शरीफैन के इमाम हज़रात तश्रीफ लाये। आल इंउिया सेमीनारों, सिम्पोज़ियमों, समारोह, सम्मेलन और जल्सों के प्रोग्राम तय हुए। इसी जगह से मुख्य मंत्री गण, उच्च अधिकारी, केन्द्रीय ग्रहमंत्री व अन्य दीनी व समुदायिक, राजनीतिक नेताओं से संपर्क किया जाता रहा। राज्यों के दावती, संगठनात्मक दौरों की योजना बनायी जाती। आल इंडिया रेफ्रेशर कोर्स, हिफ्ज व तजवीद व तफसीर कुरआन करीम प्रतियोगिता के प्रोग्राम बनाये जाते। पाक्षिक जरीदा तर्जुमान उर्दू, मासिक इस्लाहे समाज हिन्दी, अल इस्तेकामा अरबी और दी सिम्मपल टुरूथ अंग्रेजी की एडीटिंग और किताबत होती। तफसीर अह्सनुल बयान उर्दू, सनाई तर्जुमा हिन्दी, नोबल कुरआन अंग्रेजी, शरह बुखारी शरीफ व सुनन दारमी, डायरेक्टरी मदारिस अहले हदीस, तारीखे अहले हदीस, तहरीके ख़तमे नबुव्वत, तराजिम अहले हदीस, मदारिस अहले हदीस देहली, दबिसताने नज़ीरिया, कांफ्रेन्स के मक़ालात का संग्रह, पत्रिकाओं के विशेषांक, आतंकवाद के खिलाफ उर्दू, हिन्दी और अंग्रेजी के विभिन्न एडीशन, फतावा शैखुल हदीस, प्राथमिक शिक्षा पाठ्य पुस्तक, नायाब दीनी, दावती और पाठ्यपुस्तक किताबों की छपाई और तैयारी के मरहले तय किये जाते। अहले हदीस कम्पलैक्स और इस में काफी विस्तार मस्जिद, अल माहदुल आली लित तखस्सुस फिद दिरासातिल इस्लामिया के क्षात्रों के लिये दो मंज़िला बिलडिंग, सैयद नज़ीर हुसैन मुहद्दिस लाइब्रेरी, दारूल इफ्ता और स्टूडेन्ट्स गाइडेन्स सेन्टर के निमार्ण एवं संपादकीय कार्य आदि। कहने का मतलब यह है कि तमाम काम इसी टूटे फूटे कमरे में लेकिन दृढ़ साहस से अंजाम

दिये जाते थे। इसी के करीब एक टूटी फूटी सीढ़ी से ऊपरी मंज़िल पर जाते जहां टमपरेरी कमरों में स्टाफ के लिये रहने और मेहमानों के ठेहरने का प्रबन्ध था। तमाम कमरों की हालत भी बद से बदतर थी यहाँ तक कि अमीर महोदय मौलाना असगर अली इमाम महदी सलफी हफिजहुल्लाह को आशंका हो गया था कि हलकी सी भी रेंज का भूकम्प आया तो यह बिलडिंग मिटटी के ढेर में परिवर्तित हो जायेगी या अगली दो तीन बारिश को सहन न करते हुए धराशायी हो जाएगी। कार्यकर्ताओं को भी अपनी जान का खतरा लगा रहता था जिस का वह स्पष्ट रूप से इज़हार करते। अमीर साहब ने कई बार इसकी टपकती हुई छत को दुरूस्त कराने की कोशिश की और आंशिक मरम्मत भी कराई गई लेकिन बिलडिंग पुरानी होने और जरजर होने की वजह से समस्या और ज़्यादा बढ़ गई और अपनों के लिये तकलीफदेह, फिकरमन्दी व दर्दमन्दी के इज़हार का ज़रीआ बनती रही और गैरों के खुश होने, हंसने और मज़ाक व ठठोल का अवसर प्रदान करती रही और संसाधन की कमी और अन्य रूकावटों की अधिकता ने इस की दुरूस्तगी और नये सिरे से निर्माण को और ज़्यादा मुश्किल और जटिल बना दिया था लेकिन फिर भी अमीर महोदय मौलाना असगर अली इमाम महदी सफली साहब सुबह शाम इसी चिंता में लगे रहते कि इस जरजर बिलडिंग को किस तरह नये सिरे से बनाया जाए। बैंक में बिलडिंग फंड के नाम पर कोई रक़म डिपोजिट क्या होती अन्य प्रभाग अपनी सक्रियता के बावजूद अर्थिक बदहाली का शिकार थे लेकिन अमीर महोदय ने संकल्प कर लिया कि हालात चाहे कितने भी अकहनीय हों अब इस १६० साल पुरानी बिलडिंग को गिरा कर नये सिरे से बनाना चाहिये अतः अमीर महोदय ने इंजीनियरों से सलाह व मश्वरा करना शुरू कर दिया और आंशिक तौर पर इस की जजरता और फटी हुई दीवार और गिरती हुई छत वाले हिस्से के निमार्ण का काम महज़ अल्लाह भरोसे शुरू कर दिया जब कि उस वक़्त बहुत से कामों को अंजाम देने का फर्ज़ भी अदा करना था और सर पर ३४वीं आल इंडिया अहले हदीस कांफ्रेन्स की भारी भरकम जिम्मेदारी और खर्च सवार थे। इस के अलावा यह बिलडिंग चूंकि जामा मस्जिद के बिलकुल सामने गेट न. एक उर्दू बाजार रोड से अन्दर की जानिब एक तंग गली में स्थिति होने की वजह से जहां हर वक़्त लोगों की आवाजाही रहती है इसलिये मलबा को हटाना भी एक बड़ा मसला और मैटेरियल लाना भी एक बड़ा मसला, इसलिये रात के आखिरी पहर में यह काम अंजाम देने के लिये वक़्त तय था। बिलडिंग तीन तरफ से घिरी हुई थी और नव निमार्ण के लिये अन्य रूकावटें भी थीं जिन के सबब आप को बहुत सी परेशानियों से दोचार होना पड़ा। बड़ी उदारता से आस पास के दसियों घर वासियों को संतुष्ट किया। अपनी रणनीति से जटिलताओं की गांठ खोलते रहे और दृढ़ संकल्प लेकर अल्लाह के नाम से बिलडिंग के हिस्सों को ढाते रहे और निमार्ण का काम धीरे धीर शुरू किया जिसके बाद माशाअल्लाह हिन्दुस्तान के अधिकांश शहरों और गांव से सहयोग का सिलसिला जारी हुआ। मर्कज़ी, सूबाई और शहरी जमीअतों के पदधारी और सदस्यों

ने सामर्थ्य के अनुसार सहयोग दिया। पूरे हिन्दुस्तान से अहले हदीसों ने जहां सहयोग देकर अमीर महोदय का हाथ बटाया वहीं कुछ लोगों ने हसद और अपनी पुरानी आदत और नासमझी की वजह से रूकावटें खड़ी कीं और बदगुमानियों का सिलसिला भी जारी रखा लेकिन इसके लिये अमीर महोदय और संबन्धितों को न मालूम किन किन हालात से गुज़रना पड़ा और देखते देखते अलहम्दुलिल्लाह भव्य तीन मंज़िला बिलडिंग एक ऐसे एलाके में खड़ी हो गई जो हिन्दुस्तान के सलफियों की पुरानी आरजू थी वह पूरी हुई और दिलों को सुरूर और नज़र को नूर फराहम हुआ और इस भव्य काम को देख कर और सुन कर फूले न समाए वहीं उनके दिल से दुआएं भी निकलीं और प्रशंसा के वाक्य भी कहे और लिखे और अल्लाह के शुक्रगुज़ार हुए। निःसन्देह यह अल्लाह के करूणा, उपकार और उसकी क्षमता से पूरा हुआ। यह बिलडिंग मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द की आन बान शान, प्रतिष्ठा का जीता जागता नमूना है और यह जमीअत की तारीख में सुनहरे अक्षरों से लिखा जाएगा। आप ने अपनी सूझबूझ और साहस व मनोबल से वह कारनामा अंजाम दिया है कि शताब्दियों तक जमीअत अहले हदीस आप को याद रखेगी।

अहले हदीस मंज़िल के बाद एक निगाह ओखला के अहले हदीस कम्पलैक्स पर डालते हैं जो माशाअल्लाह एक विस्तार अराज़ी पर फैला हुआ है। यह अमीर महोदय की दूररस निगाह थी कि उन्होंने इस उजाड़ और खण्डर जगह को दीनी, इल्मी और दावती संस्था व रूप में परिवर्तित कर दिया। चारों तरफ से बाउन्डरी से घिरी यह जगह भी मर्कज़ी जमीअत के प्रतिष्ठा का प्रतीक और उसकी विभिन्न दीनी, दावती, शैक्षणिक, ज्ञानात्मक, कल्याणकारी, मानव सेवा की गतिविधियों का केन्द है। अहले हदीस कम्पलैक्स में निर्माण का काम जारी है जिस में विस्तार आडीटोरियम के अलावा कई विभागों के कार्यालय और मेहमानों के लिये जगह विशेष है। इसी एहाते में पश्चिम की तरफ एक विस्तारपूर्ण और लम्बी चौड़ी अत्यंत खूबसूरत तीन मंज़िला जामा मस्जिद है। साफ सुथरे और मेहमान खाने के अलावा जमीअत के जिम्मेदारान और जमाअत के अन्य मेहमानों के लिये कई मेहमान खाने हैं। जमीअत की उच्च शैक्षणिक एवं प्रशिक्षणिक संस्था अल माहदुल आली लिल तखस्सुस फिद दिरासातिल इस्लामिया के क्षात्रों के रहने का भी प्रबन्ध है। मेहमानों और स्टाफ के लिये डायनिंग हाल और किचन है। विभिन्न कार्यालय लाइब्रेरी और सुसज्जित मीटिंग हाल भी मर्कज़ी जमीअत की प्रतिष्ठा में बढ़ोतरी का सबब है। खुली जगह हरयाली से परिपूर्ण है यह सब जमीआत की मौजूदा कियादत (नेतृत्व) विशेष रूप से अमीर महोदय की प्रयासों का परिणाम है। अमीर महोदय ने अपने संकल्प को अहले हदीस मंज़िल और ओखला के अहले हदीस कम्पलैक्स तक ही सीमित नही रखा बल्कि विहार के जिला कटिहार में कई एकड़ जमीन भी अमीर महोदय ने खरीदी है जो इस वक़्त मरकज़ की करोड़ों की सम्पत्ति और थोड़ी परमानेन्ट आमदनी का माध्यम भी है। कम्पलैक्स से करीब ठोकर नंबर ४ में दो मंज़िला बिलडिंग भी आप के प्रयासों से हासिल की गई है जो

आमदनी का एक प्रभावी ज़रिया है। आप जमीनी स्तर के जमाअत के सेवक और हर वक़्त आस पास और सुदूर का सफर करके जमाअत के लोगों से संपर्क में रहते हैं। कश्मीर से कन्या कुमारी और बंगाल की खाड़ी से मुंबई की खाड़ी तक जहां भी प्राकृतिक आपदा और फसादात से अवाम प्रभावित होते हैं वहां तुरन्त आप स्वयं रिलीफ लेकर पहुंच जाते हैं। पिछले दिनों जब सैलाब से कश्मीर दहल गया था उस वक़्त भी सब से पहली रिलीफ आप ने ही पहुंचाई थी और शुक्र का अवसर है कि मैं भी आप के साथ था। चन्द साल पहले जब आसाम में लाखों लोग बेघर हुए थे उस वक़्त भी अत्यंत शंकाजनक क्षेत्रों में आप ने रिलीफ़ पहुंचाई थी। इतने कठिन हालात में जंगलात में रह रहे लोगों तक रिलीफ़ लेकर पहुंचे थे और रमजानुल मुबारक की सेहरी और इफतारी सिर्फ चना और भूना से ही करने पर संतोष किया था। इसी तरह बिहार, गुजरात, केरला, हैदराबाद, पश्चिम बंगाल वगैरह में सैलाब प्रभावितों और दिल्ली के फसाद प्रभावितों के बीच रिलीफ़ की तकसीम भी आप का बहुमूल्य कारनामा है जिन में काम के साझीदार की हैसीयत से मुझे भी रहने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। देश के महत्वपूर्ण राष्ट्रीय और समुदायिक मामलात में भी जिम्मेदाराना भूमिका अदा करते हैं। बहरहाल हम बजा तौर पर कह सकते हैं कि हालिया दौर में मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द को जो प्रतिष्ठा और उत्थान प्राप्त हुआ वह अल्हमदुलिल्लाह आप के ही प्रयासों का नतीजा है। मैं दुआ करता हूं कि अल्लाह तआला आप को अपने संरक्षण और अमान में रखे और सेहत के साथ लंबी उमर अता फरमाये ताकि इसी तरह और ज़्यादा कौम, समुदाय, जमीअत व जमाअत का काम अंजाम देते रहें और आप से लाभ पहुंचने का सिलसिला जारी रहे। बृहस्पतिवार, २ जनवरी २०२३

शेष पृष्ठ २६ का

यतीम का पालन-पोषण करने वाला जन्नत में इस तरह होंगे। फिर आप सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम ने अपनी शहादत की उंगली और बीच वाली उंगली से इशारा किया। (बुखारी ६००५)

अर्थात जिस तरह शहादत और बीच की उंगली एक साथ है उसी तरह जन्नत में नबी सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम और यतीम की परवरिश करने वाले एक साथ होंगे।

इसलिए हमें चाहिए कि हम यतीम की परवरिश करने वालों में से बनें। यह थे यतीमों के कुछ महत्वपूर्ण अधिकार जिन्हें पूरा करना ज़रूरी है। आज के इस युग में लोग यतीमों के साथ जो बर्ताव कर रहे हैं, वह गलत है। लोग उनकी परवरिश और उनके अधिकार को भूल चुके हैं। उनके साथ सदव्यवहार और उनके माल की सुरक्षा के बजाये उन पर अत्याचार और उनके माल को हड़पने की कोशिश की जा रही है।

हमें अपने हालात को सुधारना होगा और यतीमों के साथ सदव्यवहार और उनके अधिकार को पूरा करना होगा तभी जाकर हम एक अच्छे इंसान हो सकते हैं। अन्त में अल्लाह से दुआ है कि वह हमें यतीमों के साथ सदव्यवहार और उनके अधिकार को पूरा करने की तौफीक़ दे। (आमीन)

• • •

शिक्षा एवं प्रशिक्षण के बारे में लाभकारी मश्वरे

❑ **डा० अबुल हयात अश्रफ**

ख़ानदान के अधिकतर बुजुर्ग इस बात से पूरे तौर पर बेख़बर होते हैं कि वह अपना वक़्त किस तरह गुज़ार रहे होते हैं। दूसरे बुजुर्गों के पास बैठकर फुजूल बातें करना, एक दूसरे की बुराई करना और अपना वक़्त बेमक़सद गुज़ारना बहुत ही तकलीफ देह होता है। घर के बच्चे बुजुर्गों को देखकर वक्त को बर्बाद करने के आदी हो जाते हैं। कुछ आसान अभ्यास आप को बेमकसद कामों से छुटकारा दिलाने में मदद गार साबित होगा। इसका सकारात्मक प्रभाव घर के छोटे बच्चों पर यहां तक कि थोड़ा सीनियर बच्चों पर भी पड़ेगा।

१. अपने आस पास सफाई सुथराई रखें और चीज़ें सलीक़े से रखें। बिखरी हुई चीज़ें, घर के सामान या इल्मी किताबें और कपड़े आप के ध्यान को भटकाते हैं। चीज़ों को सहीह और संगठित रूप से रखने से चीज़ों के खोने की संभावना कम रहती है और बच्चे भी अनजाने तौर पर प्रशिक्षित और ट्रेन्ड हो जाते हैं। इन चीज़ों को ढूढ़ने में वक़्त भी बर्बाद होता है।

२. आप ज़रूरी कामों का शेड्यूल बना लें जिसमें उन्हें पहले करने को वरियता दी जाये। ज़रूरी और महत्वपूर्ण कामों को सुबह सवेरे अंजाम दें क्यों कि दिन के शुरू में आप ताजादम और ऊर्जा से भरपूर होते हैं। कम ज़रूरी काम खाली वक़्तों में करने की आदत डालें।

३. सुबह सवेरे फज्र की नमाज़ के बाद कुरआन की तिलावत से दिन की शुरूआत करें और अल्लाह से संबन्ध जोड़ें। सुबह का वक़्त ऐसा होता है जब गैर ज़रूरी हस्तक्षेप की संभावना भी नहीं होती। बच्चे आपके वक्त की मन्सूबा बन्दी (पलानिंग) से प्रभावित होंगे और वह भी इसके आदी बनेंगे।

४. खानदान के कुछ बुजुर्ग अपने ऊपर ढेर सारी जिम्मेदारियां ले लेते हैं। यह काम ''कल कर लेंगे'' आदत डाल लेते हैं, इस आदत को तुरन्त छोड़ने की ज़रूरत है, बच्चों पर इस का नकारात्मक असर पड़ता है।

५. बच्चों को टेलीवीज़न से दूर रखें या कम से कम देखने दें। प्रोग्राम्स के चैनल भी सकारात्मक और अच्छा होना चाहिए। घरों में ऐसे अखबारात न लाएं जो अश्लीलता और बेकार बातों पर आधारित होते हैं। ऐसा करने से जहाँ घर के छोटे बच्चों और नई नस्लों का माहौल दुरूस्त होगा वहीं अखबारात को भी सोचना पड़ेगा कि अश्लील सामग्री के प्रकाशित करने के सबब उनके अख़बारात के सरकूलेशन में कमी आई है।

६. घर के बुजुर्गों को स्वयं भी सभ्य और सदव्यवहार का वाहक होना चाहिए। जिनकी तरफ बच्चों की निगाहें उठे तो उनके अच्छे व्यवहार से खुश हो जाएं, बुजुर्गों को अच्छे स्वभाव, हंसमुख और नरम दिल होना चाहिए।

७. घर के बुजुर्गों बच्चों के दिलों में सच्चाई के महत्व की भावना पैदा करें और झूठ से बचने की नसीहत करें।

८. बच्चों को शुरू से ही यह सिखाना ज़रूरी है कि वह अपने बुजुर्गों के लिये दुआ करें यानी उनके लिये मग़्फ़िरत की दुआ करें।

९. बुजुर्गों का बच्चों के साथ रहम दिली और नरमी से पेश आना उनके लिये सद-कए जारिया हो गा वह अल्लाह के करीब होंगे और अपनी आफ़ियत का सामान भी जमा करेंगे।

❑ ❑ ❑

इस्लाम की शिक्षाएं और सिद्धांत

अबू हुरैरा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः कोई आदमी चलते चलते राह में कांटे की कोई टेहनी पाकर उसको हटा देता है तो इस पर अल्लाह उसका शुक्रिया अदा करता है और उसकी मग्फिरत कर देता है। (बुखारी ६५४ मुस्लिम १९१४)

अबू हुरैरा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जब मुर्ग की बांग (आवाज़) सुनो तो अल्लाह से उसके फज्ल का सवाल करो क्योंकि उसने फरिश्ते को देखा है और जब तुम गधे की आवाज़ सुनो तो शैतान से अल्लाह की पनाह मांगो क्योंकि उसने शैतान को देखा है। (बुखारी ३३०३, मुस्लिम २७२९)

अबू हुरैरा रजियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि मेरे खलील सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मुझे हर महीने की तीन तारीखों में रोज़ा रखने की वसिय्यत की थी, और चाश्त की दो रकअत पढ़ने की वसिय्यत की थी और सोने से पहले वित्र पढ़ लेने की भी वसिय्यत की थी। (बुखारी, १९८१ मुस्लिम ७२१)

अबू हुरैरा रजियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि एक आदमी नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास आया और कहाः ऐ अल्लाह के रसूल किस तरह के सदके में ज़्यादा सवाब है? आपने फरमायाः जिसे तुम सेहत के साथ बुख्ल के बावजूद करो तुम्हें एक तरफ फकीरी का डर हो और दूसरी तरफ मालदार बनने की तमन्ना और उस सदका खैरात में ढील नहीं होनी चाहिये कि जब जान हलक तक आ जाये तो उस वक़्त तू कहने लगे कि फुलां के लिये इतना और फुलां के लिए इतना हालांकि अब तो वह फुलां का हो चुका है। (बुखारी १४१९, मुस्लिम १०३२)

अबू हुरैरा रजियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः तुम जनाज़ा को तेज़ी से लेकर चलो क्योंकि अगर वह नेक है तो तुम उसको भलाई की तरफ नजदीक कर रहे हो और अगर इसके सिवा है तो एक बुराई है जिसे तुम अपनी गर्देनों से उतार रहे हो। (बुखारी १३१५, मुस्लिम ९४४)

अबू हुरैरा रजियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः अल्लाह तआला का हर मुसलमान पर हक़ है कि हर सात दिन में एक दिन नहाये, उस दिन अपने सर को और जिस्म को गुस्ल दे। (बुखारी ८९७ मुस्लिम ८४९)

अबू हुरैरा रजियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः कसम खाने से सामान बिक जाता है लेकिन कसम बरकत को मिटा देती है। (बुखारी २०८७, मुस्लिम १६०६)

अबू हरैरा रजियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया मेरी तमाम उम्मत को मआफ कर दिया जायेगा लेकिन खुल्लम खुल्ला गुनाह करने वालों को मआफ नहीं किया जायेगा और खुल्लम खुल्ला गुनाह करने में यह भी शामिल है कि एक शख्स रात को कोई (गुनाह) का काम करे और अल्लाह ने उसके गुनाह को छुपा लिया है मगर सुबह होने पर वह कहने लगे कि ऐ फुलां मैंने कल रात फुलां फुलां काम किया था, रात गुज़र गयी थी, उसके रब ने उसके गुनाह को छुपाये रखा और जब सुबह हुयी तो उसने खुद ही बता दिया। (बुखारी ६०६९, मुस्लिम २९९)

अबू हुरैरा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जब रमज़ान का महीना आता है तो जन्नत के दरवाज़े खोल दिये जाते हैं और जहन्नम के दरवाज़े बन्द कर दिये जाते हैं और शैतान जंजीरों में जकड़ दिये जाते हैं। (बुखारी ३२७७ मुस्लिम १०७९)

अबू हुरैरा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जब कोई भूल कर खा पी ले तो उसे चाहिये कि अपना रोज़ा पूरा करे क्योंकि उसे अल्लाह ने खिलाया पिलाया है। (बुखारी १९३३, मुस्लिम ११५५)

अबू हुरैरा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जिसने इस घर (काबा) का हज्ज किया और उसमें न शहवत की बात की और न कोई गुनाह का काम किया तो वह उस दिन की तरह वापस होगा जिस दिन उस की मां ने उसे जना था। (बुखारी १८१९, मुस्लिम १३५०)

अबू हुरैरा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः चार चीजों की बुनियाद पर औरत से शादी की जाती है उसके माल की वजह से उसके हसब नसब की वजह से और उसके दीन की वजह से और तुम दीनदार औरत से शादी करके कामयाबी हासिल करो, नहीं तो तुम्हारे हाथों में मिटटी लगेगी। (बुखारी ५०९० मुस्लिम १४६६)

अबू हुरैरा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः मेरे घर और मेरे मिंबर के बीच की जमीन जन्नत के बागों में से एक बाग है और मेरा मिंबर मेरे हौज़ के ऊपर होगा। (बुखारी ११९६, मुस्लिम १३९१)

अबू हुरैरा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः सवार पैदल चलने वाले से सलाम करेगा, पैदल चलने वाला बैठने वाले से

और थोड़े लोग ज़्यादा लोगों से सलाम करेंगे। (बुखारी २१६० मुस्लिम ६२३२)

और बुखारी में ''छोटा बड़े पर'' का शब्द भी है। (बुखारी ६२३१)

अबू हुरैरा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल ने फरमायाः जो दया नहीं करता है उस पर दया नहीं की जाती है। (बुखारी ५६६७ मुस्लिम २३१८)

अबू हुरैरा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः बन्दे की दुआ कुबूल होती है जब तक कि वह जल्दी न करे कि कहने लगे कि मैंने दुआ की थी और मेरी दुआ कुबूल नहीं हुयी। (बुख़ारी ६३४, मुस्लिम २७३५)

अबू हुरैरा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः क्यामत उस वक्त आयेगी जब एक आदमी दूसरे आदमी की कब्र से गुजरे गा तो वह कहेगा ऐ काश मैं उसकी जगह होता। (बुखारीः ७११५ मुस्लिम १५७)

अबू हुरैरा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः कोई इस तरह दुआ न करे कि ऐ अल्लाह! अगर तू चाहे तो मेरी मगफिरत फरमा दे, अगर तू चाहे तो मुझ पर दया कर अगर तू चाहे तो मुझे रोज़ी दे बल्कि मजबूत इरादे से माँगनी चाहिये क्योंकि अल्लाह जो चाहता है करता है कोई उस पर जबरदस्ती करने वाला नहीं (बुखारी ७४७७ मुस्लिम २६७६)

अबू हुरैरा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः तुम में से कोई शख्स मौत की तमन्ना न करे अगर वह नेक है तो संभव है कि और ज्यादा नेकी करे। (बुखारी ७२३५ मुस्लिम २६८२)

और बुखारी में यह शब्द हैं ''और अगर बुरा है तो शायद अपनी बुराईयों से तौबा कर ले''।

अबू हुरैरा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जब तुम में से कोई छींके तो अल्हम्दुलिल्लाह कहे और उसका भाई या साथी यरहमोकल्लाह कहे जब उसका साथी यरहमोकल्लाह कह दे तो छींकने वाला इसके जवाब में यहदीकुमुल्लाह व युस्लेह बालकुम कहे। (बुखारी ६२२४ मुस्लिम २६६२)

अबू हुरैरा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः निकट ही ऐसे फितने पैदा होंगे जिनमें बैठने वाला खड़े होने वाले से बेहतर होगा और खड़े रहने वाला चलने वाले से बेहतर होगा और चलने वाला दौड़ने वाले से बेहतर होगा। जो दूर से उनकी तरफ झांक कर भी देखेगा तो वह उनको भी समेट लेंगे। उस वक्त जिस किसी को कोई पनाह मिल जाये या बचाव की जगह मिल जाये तो वह उसमें पनाह ले ले। (बुखारी ७०८१ मुस्लिम २८८६)

• • •

मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द की कार्य समिति के असाधारण सत्र में हर प्रकार के आतंकवाद की निन्दा

मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द से जारी एक अखबारी बयान के अनुसार पिछले कल अहले हदीस कम्पलैक्स ओखला नई दिल्ली में मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द की कार्य समिति का एक महत्वपूर्ण सत्र मर्कज़ी जमीअ अहले हदीस हिन्द के अमीर मौलाना असगर अली इमाम महदी सलफी की अध यक्षता में आयोजित हुआ जिस में देश के अधिकांश राज्यों से आये प्रतिष्ठित सदस्यगण, राज्य इकाइयों के पदधारी और विशेष आमंत्रित सदस्यों ने बड़ी तादाद में प्रतिभाग लिया। अध्यक्ष महोदय ने अकीद-ए-तौहीद के सुधार, कुरआन और हदीस का अनुसरण, ईश्परायणता, पवित्रता, राष्ट्रीय सौहार्द व एकता, भाईचारा, सदव्यवहार, मध्यमार्ग पर चलने पर जोर दिया। बहस से परहेज, मामलात में पारदर्शिता का उपदेश दिया। इसके अतिरिक्त सांप्रदायिक सौहार्द, इन्सान दोस्ती और इस्लाम की बहुमूल्य एवं उज्जवल शिक्षाओं से देशबन्धुओं को अवगत कराने की ज़रूरत पर विशेष जोर दिया। इसके अलावा हर प्रकार के आतंकवाद, अशान्ति धार्मिक वैमनष्यता और भड़काऊ बयानात की कड़े शब्दों में भर्त्सना की और पूरी ईमानी ताक़त, संयम, हिम्मत व मनोबल, बुद्धिमत्ता के साथ शुभचिंतक उम्मत होने का कर्तव्य निभाने का उपदेश दिया। मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द के महा सचिव मौलाना मुहम्मद हारून सनाबिली ने इस सत्र में मर्कज़ी जमीअत की कारकर्दगी रिपोर्ट पेश की जिस की सदस्यों ने पुष्टि की और कोषाध्यक्ष ने हिसाबात पेश किये जिस पर हाउस ने संतुष्टि व्यक्त की। मीटिंग में जमीअत के कामों की समीक्षा की गई और दावती तालीमी, संगठनात्मक, कल्याणकारी कार्यों और मानवीय सेवाओं को गति देने पर गौर किया गया। इसके अलावा जीमअत की आर्थिक स्थिरता खास तौर से अहले हदीस मंजिल और अहले हदीस कम्पलैक्स में निर्माणाधीन बहुउददेशीय भवन के लिये देशीय स्तर पर शुभचिंतक हज़रात का ज़्यादा से ज़्यादा सहयोग हासिल करने की अपील की गई। मर्कजी जमीअत अहले हदीस हिन्द की कार्य समिति में निम्नलिखित प्रस्ताव और क़रारदाद पारित किये गये। क़रारदाद और प्रस्ताव का मूल्य लेख (मतन) निम्नलिखित है।

●हमारी दुनिया और आखिरत की सफलता एकेश्वरवाद अकीदा पर निर्भर है जो तमाम इन्सानों को एक अल्लाह की इबादत करने, बन्दों को बन्दों की गुलामी से मुक्ति दिलाने और आखिरत में निजात का महत्वपूर्ण ज़रीआ है लेकिन यह हक़ीकत है कि हम ने तौहीद के अकीदे को मानवता विशेष रूप से देशबन्धुओं तक पहुंचाने और इसको साधारण करने, में कोताह साबित हुए हैं। इस्लाम के आदेशों एवं उपदेशों से गफलत, नमाज़, कुरआन की तिलावत, दुआ और बन्दों के अधिकारों की रक्षा न करने की वजह से हमारी समस्याएं बढ़ती जा रही हैं। मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द की कार्य समिति का यह सत्र इमामों, खतीबों

और दीनी एवं समुदायिक संस्थाओं के पदधारियों से तौहीद के अक़ीदे की अहमियत एवं उपयोगिता को उजागर करने और इस्लाम की शिक्षाओं की विशेषताओं और खूबियों को साधारण करने की अपील करता है।

● इस देश की बड़ी आबादी हमारी दावत व मिशन से नावाक़िफ़ और वंचित है जिस की वजह से इस्लाम और मुसलमानों के बारे में देश बन्धुओं के बीच बहुत सी गलत फहमियाँ (भ्रांतियां) फैली हुई हैं जिनके निवारण के लिये संगठित प्रयास करना और उनसे संपर्क को मजबूत बनाना और खाड़ी को पाटना वक़्त की अहमतरीन ज़रूरत है। मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द का यह सत्र देश व समुदाय के तमाम संगठनों, ओलमा, और बुद्धिजीवियों से अपील करता है कि वह इस सिलसिले में ठोस व्यवहारिक कदम उठायें ताकि आपसी प्यार व मोहब्बत और साम्प्रदायिक सौहार्द का वातावरण प्रशस्त हो।

● मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द की कार्य समिति का यह सत्र मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द के द्वारा ''सीरत परिचय'' के नाम से जारी अभियान का स्वागत करता है और इसे वक़्त की अहम ज़रूरत करार देता है और आशा करता है कि जमीअत का नेतृत्व इसे संगठित अंदाज में अपनी निम्न इकाइयों के माध्यम से विस्तृत पैमाने पर आम करेगी ताकि इसके दूरगामी और अच्छे प्रभाव हो सकें।

● मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द की कार्य समिति के इस सत्र का मानना है कि मदरसे समुदाय की महान पूजी हैं जिन्होंने शिक्षा एवं प्रशिक्षण के क्षेत्र में स्पष्ट सेवाएं प्रस्तुत की हैं और एक बड़ी तादाद विशेष रूप से गरीब क्षात्रों को शिक्षा से सुसज्जित करने में महत्वपूर्ण रोल अदा किया है साथ ही असाक्षरता के अनुपात को कम करने में सरकार का सहयोग किया है इस लिये इन की सुरक्षा एवं बक़ा के लिये संयुक्त कार्य विधि अनिवार्य है। हालिया दिनों में बाज़ राज्य सकारों ने मदर्सों के सर्वे का जो सिलिसला शुरू किया है उसमें सहयोग करें, हिसाब किताब और तमाम कागज़ात हमेशा दुरूस्त रखें। इसके अलावा कार्य समिति का यह सत्र बिना अदालती कार्रवाई और फसले के किसी की धर्म शाला और शैक्षणिक संस्था को ढाने को चिंता की निगाह से देखता है।

● कार्य समिति का यह सत्र धनवान और शुभचिंताकों से पुरजोर अपील करता है कि वह दीनी शैक्षाणिक संस्थाओं के सहयोग के साथ साथ ऐसी आधुनिक शैक्षणिक संस्थाओं की स्थापना को सुनिश्चित बनायें जहाँ क़ौम के बच्चे अपनी धार्मिक पहचान को बाकी रखते हुए ज्ञान एवं कला के हर मैदान में दूसरों के साथ साथ चलने की योग्यता पैदा कर सकें और देश एवं समुदाय के विकास में अपनी भूमिका निभा सकें।

● मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द की कार्य समिति का यह सत्र समुदायिक, कल्याणकारी और समाजी संगठनों, संस्थाओं के पदधारियों और ओलमा से पुरजोर अपील करता है कि विश्व स्तर पर मुसलमानों की मौजूदा स्थिति के मददे नज़र एक दूसरे के खिलाफ राय व्यक्त करने से परहेज़ करें और यह हर हाल में और हमेशा अपेक्षित है। महत्वपूर्ण दीनी व समुदायिक समस्याओं में आपसी सहयोग सलाह व मश्वरा के द्वारा कोई एकमत बनाने की कोशिश करें क्योंकि किसी समुदायिक मसले पर अलग राह अपनाना समुदाय में

बिखराव का सबब बन जाता है।

● मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द की कार्य समिति का यह सत्र ऐसे टी.वी. डीबेट में जाने से बचने की अपील करता है जिस में यकतरफ़ा इस्लाम और मुसमलानों को निशाना बनाया जाता है और महत्वपूर्ण राष्ट्रीय और अवामी समस्याओं पर चर्चा न करके जान बूझ कर एक विशेष समुदाय को टारगेट किया जाता है। हां ऐसे समुदायिक प्रतिनिधियों के डिबेट में जाने में कोई हर्ज नहीं जिन की संबिन्धत समस्याओं पर गहरी नज़र हो और हाजिर जवाबी की क्षमता रखते हों। साथ ही उन्हें इस बात का भी यक़ीन हो कि जिस चैनल पर वह डिबेट में भाग लेने जा रहे हैं वहां उनके साथ कोई भेद भाव नहीं किया जाए गा और अपनी बात कहने का पूरा अवसर दिया जाएगा।

● कार्य समिति का यह सत्र इस बात को अत्यंत चिंता की निगाह से देखता है कि बाज़ तंगनज़र राजनीतिज्ञ या धार्मिक मार्गदर्शक यदा-कदा मुसलमानों के खिलाफ ज़हर फैलाते रहते हैं यहां तक कि जन साधारण प्रोग्रामों में और पुलिस की मौजूदगी में उनके समाजी एवं व्यवपारिक बायकाट की काल भी देते हैं ऐसे में सम्माननीय न्यायपालिका और पदधारी स्वयं इक़दाम करें और देश की गंगा जमुनी सभ्यता को बाक़ी रखने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका अदा करें और कार्य समिति का यह सत्र अवाम से हर हाल में शान्तिपूर्ण रहने की अपील करता है।

● कार्य समिति के इस सत्र का इस बात पर विश्वास है कि सांप्रदायिक सौहार्द, गंगा जमुनी सभ्यता, आपसी सहयोग और उदारता जैसी विशेषताएं प्रिय देश की पहचान रही हैं लेकिन कुछ लोगों के गलत बयानात और लेखों से हमारी यह पहचान कमजोर और धुंधली पड़ती जा रही है। इस तरह के नकारात्मक बयानात देश व मानवता के हित में नहीं हैं अतः यह सत्र इलेक्ट्रॉनिक व प्रिंट मीडिया के ज़िम्मेदारों और मालिकान से पुरज़ोर अपील करता है कि वह ऐसे बयानात को प्रकाशित न करें जो देश की बदनामी का कारण और विकास में रूकावट बन रहे हैं। मीडिया लोकतंत्र का चौथा स्तंभ है उससे साधारण और असाधारण लोगों को काफी आशाएं हैं इसलिये देश एवं विश्व-मीडिया को अपनी पत्रकारिता की जिम्मेदारी ईमानदाराना तरीके से निभानी चाहिए ताकि हमारे देश की सभ्यता व संस्कृति की पहचान और प्रिय देश की नेकनामी बाकी रहे।

● कार्य समिति के इस सत्र का यह एहसास है कि सभी धर्म और उनके धर्म गुरू सम्माननीय हैं। किसी की धार्मिक शिक्षाओं की गलत व्याख्या करना और गलत तरीके से पेश करना और किसी भी धर्म के धर्म गुरू का अपमान करना कानूनी और धार्मिक एतबार से गलत है। अतः यह सत्र तमाम देश वासियों से अपील करता है कि वह किसी की धार्मिक शिक्षाओं को गलत तरीके से पेश न करें क्यों कि भारत का संविधान हर नागरिक को अपने धर्म के अनुसार अमल करने और अपनी पसन्द के धर्म को अपनाने की आज़ादी देता है।

● मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द की कार्य समिति का यह सत्र देश और विदेशों में होने वाले हर तरह के आतंकी वाक़आत की निन्दा करता है और कार्य समिति का मानना है कि आतंकवाद का किसी भी धर्म से कोई संबन्ध नहीं, आतंकवाद फैलाने वालों का कोई भी

धर्म नहीं होता इसलिये आतंकी वाक़आत को किसी धर्म से जोड़ना न्याय पर आधारित नहीं है। यह बहुत अफसोसनाक है कि कुछ लोगों ने आतंकवाद को दूसरों के धर्म को बदनाम करने का माध्यम भी बना लिया है।

●मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द की कार्य समिति का यह सत्र देश की विभिन्न जेलों में बन्द नौजवानों के मुक़दमात को जल्द से जल्द निमटाने की ज़रूरत पर जोर देते हुए भारत सरकार से अपील करता है कि वह ऐसे नौजवानों की रिहाई का तुरन्त प्रबन्ध करें जो निर्दोष हों और न्यायपालिका ने जिन्हें निर्दोष करार देकर रिहा कर दिया है उनके भविष्य को बेहतर बनाने में सहयोग करें।

● मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द की कार्य समिति के इस सत्र का यह एहसास है कि बढ़ती बेरोज़गारी, रोज़मर्रा की खाने पीने की चीज़ों में बेतहाशा बढ़ोतरी, काला बाज़ारी प्रिय देश की संगीन समस्यायें हैं, इन पर कन्ट्रोल किये बिना देश की तरक़्क़ी और अवाम की खुश्हाली संभव नहीं है अतः यह सत्र सरकार से अपील करता है कि वह इन जन साधारण समस्याओं की तरफ ध्यान केन्द्रित करें और इनके समाधान के लिये प्रभावी इक़दामात करें।

शराबनोशी और अन्य मादक पदार्थ इन्सान के स्वाथ्य के लिये अत्यंत हानिकारक हैं जिस की बिना पर कई राज्यों में शराब नोशी और इसके कारोबार पर पाबन्दी लगा दी गई है अतः कार्य समिति का यह सत्र राज्य और केन्द्री सरकारों से मांग करता है कि शराब नोशी और अन्य मादक पदार्थों पर पाबन्दी लगाएं ताकि जान माल, चरत्रि व आचरण सब के लिये समान रूप से हानिकारक इस लानत से समाज को निजात दिलाई जा सके।

● कार्य समिति का यह सत्र देश के विभिन्न हिस्सों में बेमोसम की बरसात से होने वाले नुक़सानात और सैलाब की तबाहकारियों पर फिक़रमन्दी और प्रभावितों के साथ हमदर्दी का इज़हार करता है और सरकारों एवं देशबन्धुओं से अपील करता है कि वह मुसीबत की इस घड़ी में सैलाब प्रभावितों को राहत पहुंचाने में भरपूर सहयोग करें। इस तरह यह सत्र इस प्रकार के प्राकृतिक आपदा को अल्लाह की जानिब से एक आजमाइश और बन्दों को कर्म के आत्मनिरिक्षण का अवसर देने से ताबीर करता है।

विश्व स्तर पर देशों के बीच आपसी झगड़े साधारणतयः और रूस एवं यूक्रेन के बीच टकराव की स्थिति विशेष रूप से पूरी मानवता के लिये चिंता जनक है। इस सिलसिले में कार्य समिति का यह सत्र विश्व समुदाय से अपील करता है कि वह जन-शान्ति के लिये आपसी विवाद को वार्ता से हल करने का प्रयास करें क्योंकि जंग किसी भी समस्या का समाधान नहीं बल्कि वर्चस्व का रूझहान हर सूरत में घातक और खातरनाक साबित होता है।

●मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द की कार्यसमिति का यह सत्र फलस्तीन में इस्राईल की ज़ालिमाना कार्रवाई की निन्दा करते हुए राष्ट्र संघ से अपील करता है कि वह फलस्तीनियों के अधिकारों की रक्षा करे और इस्राईल की फलस्तीनियों के खिलाफ आक्रामक कार्रवाई पर अंकुश लगाए।

●मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द की कार्य समिति के इस सत्र में जमाअत की महत्वपूर्ण हस्तियों, समाजी कार्य कर्ताओं के निधन पर गहरा रंज व गम का इज़हार और उनकी मग़्फिरत की दुआ की गई ।

कुरआन में सद्व्यवहार की शिक्षाएं

प्रो० डा० ज़ियाउर्रहमान आज़मी

कुरआन सद्व्यवहार तथा सदाचार का इन्साइक्लोपीडिया है, जिनको कुछ पृष्ठों में समाहित करना असम्भव है। इसलिए यहां कुछ का वर्णन किया जा रहा है।

❑ **प्रेम और दयालुता**

यह भी उसकी निशानियों में से है कि उसने तुम्हारी ही सहजाति से तुम्हारे लिए जोड़े पैदा किए, ताकि तुम उनके पास शान्ति प्राप्त करो और उसने तुम्हारे बीच प्रेम और दयालुता पैदा की और निश्चय ही इसमें बहुत सी निशानियां उन लोगों के लिए हैं, जो सोच-विचार करते हैं, (सूरा-३०, अर-रूम, आयत-२१)

❑ **एक-दूसरे का सहयोग करना:** ऐसा न हो कि एक गिरोह की शत्रुता, जिसने तुम्हें मस्जिदे-हराम से रोक दिया था, तुम्हें इस बात पर उभार दे कि तुम ज़्यादती करने लगो। पुण्य कर्मों तथा ईश-भय के काम में तुम एक दूसरे का सहयोग करो और अपुण्य कर्मों और एक-दूसरे पर अत्याचार करने पर सहयोग मत करो। अल्लाह का भय रखो, निश्चय ही अल्लाह बड़ा कठोर दण्ड देने वाला है। (सूरा-५, माइदा, आयत-२)

❑ **न्याय करने का आदेश**

निश्चय ही अल्लाह न्याय करने, भलाई करने, तथा नातेदारों को (उनका हक़) देने का आदेश देता है और अश्लीलता, बुराई तथा सरकशी से रोकता है। वह तुम्हें नसीहत करता है, ताकि तुम ध्यान दो। (सूरा-१६, अन-नह्ल, आयत-९०)

❑ **लोगों से भली बात करना:** अल्लाह ने बनी इसराईल से जो वचन लिया था, उसमें भली बात करना भी शामिल था, परन्तु उन्होंने इसको भंग कर दिया।

याद करो जब इसराईल की सन्तान से हमने वचन लिया था कि अल्लाह के अतिरिक्त किसी और की बन्दगी न करना, और मां-बाप के साथ, नातेदारों के साथ, अनाथों तथा निर्धनों के साथ अच्छा व्यवहार करना और यह कि लोगों से भली बात करना और नमाज़ का आयोजन करना और ज़कात देना। तो तुममें थोड़े-से (लोग) ही इन बातों पर स्थिर रहे और अधिकतर लोग इनसे फिर गए। (सूरा-अल बकरा आयत-८३)

❑ **बुराई का सुधार भलाई से करना:** एक मुसलमान को अत्यन्त सहनशील तथा कोमल स्वभाव होना चाहिये, जो बुराई का जवाब बुराई से नहीं, बल्कि भलाई से दे। इसी की ओर कुरआन संकेत करता है।

''अच्छे आचरण और बुरे आचरण समान नहीं होते। इसलिए बुरे आचरण को अच्छे आचरण से दूर करो। फिर क्या देखोगे कि वही व्यक्ति, तुम्हारे और जिसके बीच वैर था, जैसे वह कोई घनिष्ट मित्र हो। और यह बात केवल उन लोगों को प्राप्त होती है जिन्होंने धैर्य से काम लिया। और उन लोगों को प्राप्त होती है जो बड़े भाग्यवान होते हैं। और यदि शैतान के उकसाने से कभी तुम्हारे अन्दर उकसाहट पैदा हो तो अल्लाह की पनाह मांगो। निःस्न्देह

वह सुनने और जानने वाला है।'' (सूरा-४१, हा-मीम अस-सजदा, आयतें-३४-३६)

❑ **ठीक और सीधी बात करना**''ऐ ईमान वालो! अल्लाह से डरते रहो, और बात कहो तो ठीक और सीधी कहो। वह तुम्हारे कर्मों को संवार देगा और तुम्हारे गुनाहों को क्षमा कर देगा और जिसने अल्लाह और उसके रसूल का आज्ञापालन किया, उसने बड़ी सफलता प्राप्त कर ली।'' (सूरा-३३, अल-अहज़ाब, आयतें-७०-७१)

❑ **सफलता प्राप्त करने वाले मोमिनों के लक्षण**

सफल हो गए ईमान वाले

जो अपनी नमाज़ों में नम्रता अपनाते हैं। और जो व्यर्थ बातों से बचने वाले हैं। और जो ज़कात अदा करते हैं।

और जो अपनी शर्मगाहों (गुत्तांगों) की रक्षा करते हैं। सिवाय अपनी पत्नियों के और लौंडियों के, जो उनके अधिकार में हों। इस दशा में वे निन्दनीय नहीं हैं परन्तु जो कोई इसके अतिरिक्त कुछ और चाहे तो ऐसे ही लोग सीमा से आगे बढ़ने वाले हैं। और जो अपनी जमानतों और अपनी प्रतिज्ञा का ध्यान रखते हैं।

और जो अपनी नमाज़ों को सही समय पर अदा करते हैं।

यह लोग वारिस होंगे, जो विरासत में फिरदौस पाएंगे। वे उसमें सदैव रहेंगे। (सूरा-२३, अल-मोमिनून, आयतें-१-११)

❑ **क़र्ज़ लेने वाला अगर तंगी में पड़ जाए तो उसको कुछ अवसर देना।**

''यदि क़र्ज़ लेने वाला तंगी में पड़ जाए, तो उसका हाथ खुलने तक उसे समय दो। और अगर दान कर दो तो यह तुम्हारे लिए अधिक अच्छा होगा, अगर तुम जानते।'' (सूरा-२, अल-बकरा, आयत-२८०)

अर्थात् क़र्ज़ लेने वाला निश्चित समय पर क़र्ज़ न लौटा सके तो उसको कुछ और समय दे दो और अगर तुम अनुभव कर लो कि अब वह क़र्ज़ वापस नहीं कर सकता, तो क्षमा कर दो। जो बहुत बड़ा पुण्य कर्म है। इस बात को जानना चाहिए।

❑ **मतभेद की दशा में अल्लाह तथा उसके रसूल की ओर रूजू करना** ''ऐ ईमानवालो! अल्लाह की आज्ञा का पालन करो, और रसूल का कहना मानो, और उसका भी कहना मानो जो तुम्हारा अधिकारी हो। फिर यदि तुम्हारे बीच कोई मतभेद हो जाए तो अल्लाह और उसके रसूल की ओर पलटो''। (सूरा-४, अन-निसा, आयत-५९)

अर्थात् कैसी भी समस्या हो, उसको हल करने के लिए अल्लाह की किताब कुरआन, और नबी की सुन्नत की ओर रूजू करना चाहिए, क्योंकि मुसलमानों के मार्गदर्शन के यही दो स्रोत हैं।

❑ **मजलिस में कुशादगी पैदा करना** ''ऐ ईमान वालो, जब तुमसे कहा जाए, मजलिसों में जगह कुशादा कर दो। तो कुशादा कर दो। अल्लाह तुम्हारे लिए कुशादगी पैदा कर देगा। और जब तुमसे कहा जाए, उठ जाओ तो उठ जाया करो। तुममें से जो ईमान लाए और उन्हें ज्ञान प्रदान किया गया, अल्लाह उनके दर्जों को उच्चता प्रदान करेगा। जो तुम करते हो, अल्लाह उसकी पूरी ख़बर रखता है''। (सूरा-५८, अल-मुजादला, आयत-११)

मजलिस में कुशादगी का अर्थ है कि इस प्रकार बैठा जाए कि दूसरों को भी स्थान मिल जाए।

(कुरआन की इंसाइकलोपीडिया से)

यतीमों के अधिकार

निसार अहमद

इस्लाम की विशेषताओं में से एक मुख्य विशेषता यह है कि उसने समाज के किसी भी वर्ग को नज़र अन्दाज़ नहीं किया है और न ही उसके अधिकार को बतलाने से गफलत बरती है। बल्कि उसने समाज के हर वर्ग के अधिकार को सम्पूर्ण रूप से वर्णन किया है। इस निबन्ध में इस्लाम में यतीमों के अधिकार को प्रस्तुत किया जा रहा हैः

सदव्यवहार करनाः सदव्यवहार तो इस्लाम की सर्वश्रेष्ठ शिक्षा है। केवल मानवजाति ही के साथ नहीं बल्कि पृथ्वी के प्रत्येक जीवों के साथ सदव्यवहार करना, इस्लाम की तालीम है। समाज में यतीमों की कुछ ऐसी हालत होती है कि उनके साथ सवव्यवहार करना अतिआवश्यक है। अल्लाह तआला फरमाता हैः और अल्लाह की इबादत करो, उसके साथ शिर्क न करो, मां-बाप से अच्छा व्यवहार करो, अपने दोस्त और मुसाफिर इन सबसे अच्छा सुलूक करो, साथ ही लौंडी और गुलामों से भी सदव्यवहार करो जो तुम्हारे अण्डर में हैं और अल्लाह घमण्डी और गुरूर करने वालों को पसन्द नहीं करता। (निसाः३६)

और सूरह बकरा आयत न० ८३ में है कि अल्लाह ने बनी इसराईल से जो अहद व पैमान लिया उसमें यतीमों के साथ सदव्यवहार करना भी था।

दौलत की सुरक्षा करनाः यतीमों का जो पालन-पोषण करते हैं और जो उनके सरपरस्त होते हैं उनके लिए ज़रूरी है कि वह यतीम की दौलत की सुरक्षा करें और जब वह व्यस्क हो जायें तो इन्साफ के साथ दौतल उनके सुपुर्द कर दे। अल्लाह तआला फरमाता हैः ''और यतीमों को तुम उनका माल दे दो, और पाक चीज़ के बदले नापाक चीज़ न लो और अपने मालों के साथ उनके माल मिलाकर न खा जाओ। निःसंदेह यह बहुत बड़ा गुनाह है''। (निसाः२)

यतीमों के माल के सम्बन्ध में पूर्ण रूप से शिक्षा देते हुए अल्लाह कहता है ''और यतीमों को उनके वयस्क हो जाने तक आज़माते रहो फिर अगर तुम उनमें बेहतरी देखो तो उनका माल उन्हें सौंप दो, और उनके बड़े हो जाने के डर से उनके मालों को जल्दी जल्दी फुजूल खर्चीयों में तबाह न करो, मालदारों को चाहिए कि उनके माल से बचते रहें, हां अगर पालन पोषण करने वाला गरीब हो तो भले ढ़ंग से उनके माल से खाले, फिर जब उनको उनका माल दो तो गवाह बना लो, और वास्तव में अल्लाह हिसाब लेने के लिए काफी है।'' (निसा-६) यतीम के माल को अवैध तरीके से खाने वाले के बारे में कुर्आन में अल्लाह कहता है जो लोग अवैध तरीके से यतीम का माल खाते हैं, वह अपने पेट में आग भर रहे हैं और वह जहन्नम में जायेंगे। (निसाः१०)

यतीमों का पालन-पोषण करनाः इस्लमा की शिक्षा है कि यतीम का पालन-पोषण मुख्य रूप से करीबी लोग करें। नबी सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम ने फरमाया मैं और

शेष पृष्ठ १५ पर

गाँव महल्ला में सुबह शाम पढ़ाने के लिये मकातिब क़ाइम कीजिए
मकातिब में तजवीद और कुरआन की शिक्षा का आयोजन कीजिये

हज़रात! पवित्र कुरआन इन्सानों और जिन्नों के नाम अल्लाह का अंतिम सन्देश है जो आखिरी नबी पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर नाज़िल हुआ जो मार्गदर्शन का स्रोत, इबरत व उपदेश का माध्यम, दीन व शरीअत और तौहीद व रिसालत का प्रथम स्रोत है जिस का अक्षर-अक्षर ज्ञान और हिक्मत व उपदेश के मोतियों से परिपूर्ण है जिस का सीखना सिखाना, और तिलावत सवाब का काम और जिस पर अमल सफलता और दुनिया व आखिरत में कामयाबी का सबब और ज़मानत है और कौमों की इज़्ज़त व जिल्लत और उत्थान एवं पतन इसी से सशर्त है। यही वजह है कि मुसलमानों ने शुरूआत से ही इसकी तिलावत व क़िरत और इस पर अमल का विशेष एहतमाम किया। हिफ्ज व तजवीद और कुरआन की तफसीर के मकातिब व मदारिस काइम किए और समाज में इस की तालीम व पैरवी को विशेष रूप से रिवाज दिया जिस का परिणाम यह है कि वह कुरआन की बरकत से हर मैदान में ऊंचाइयों तक पहुंचे लेकिन बाद के दौर में यह उज्जवल रिवायत दिन बदिन कमजोर पड़ती गई स्वयं उप महाद्वीप में कुरआन की तालीम व तफसीर तो दूर की बात तजवीद व किरात का अर्से तक पूर्ण और मजबूत प्रबन्ध न हो सका और न इस पर विशेष ध्यान दिया गया जबकि कुरआन सीखने, सिखाने, कुरआन की तफसीर और उसमें गौर व फिक्र के साथ साथ तजवीद भी एक अहम उददेश था और नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इस की बड़ी ताकीद भी फरमाई थी।

शुक्र का मकाम है कि चन्द दशकों पहले मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द सहित विभिन्न पहलुओं से शिक्षा जागरूकता अभियान के पिरणाम स्वरूप, मदर्सों, जामिआत, और मकातिब व मसाजिद में पवित्र कुरआन की तजवीद का मुबारक सिलसिला शुरू हुआ था जिस के देश व्यापी स्तर पर अच्छे परिणाम सामने आए। पूरे देश में मकातिब बड़े स्तर पर स्थापित हुए और बहुत सी बस्तियों में मकतब की तालीम के प्रभाव से बच्चों का मानसिक रूप से विकास होने लगा लेकिन रोज़ बरोज़ बदलते हालात के दृष्टिगत आधुनिक पाठशालाओं, कन्वेन्ट्स और गांव में मदारिस की वजह से मकातिब बहुत प्रभावित हुए इस लिये मकातिब को बड़े और अच्छे स्तर पर विकसित करने की ज़रूरत है ताकि नई पीढ़ी को दीन की बुनियादी बातों और पवित्र कुरआन से अवगत कराया जा सके।

इसलिये आप हज़रात से दर्दमन्दाना अपील है कि इस संबन्ध ा में विशेष ध्यान दें और अपने गांव महल्लों में सुबह व शाम पढ़ाने के लिये मकातिब की स्थापना को सुनिश्चित बनाएं। अगर काइम है तो उनकी सक्रियता में बेहतरी लाएं, प्राचीन व्यवस्था को अपडेट करें, इन में तजवीद और कुरआन की शिक्षा का विशेष आयोजन करें ताकि जमाअत व मिल्लत की नई पीढ़ी को दीन व चरित्र से सुसज्जित करें और उन्हें दीन व अकीदे पर काइम रख सकें।

अल्लाह तआला हम सब को एक होकर दीन जमाअत व जमीअत और मुल्क व मिल्लत की निस्वार्थता सेवा करने की क्षमता दे, हर तरह के फितने और आजमाइश से सुरक्षित रखे और वैश्विक महामारी कोरोना से सबकी रक्षा करे। आमीन

अपील कर्ता

असगर अली इमाम महदी सलफी

अमीर, मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द एवं अन्य जिम्मेदारान